निष्कर्ष

लोकगीत ग्रामीण जन से संबंधित साहित्य है। यह प्राय: मौखिक रूप में होता है जिसके रचनाकार अज्ञात होते हैं। लोकगीत की परंपरा विश्वास पर टिकी हुई है जिसमें लोकसमाज की भाषा होती है। यह गीत सभ्यता के प्रभाव से दूर अनपढ़ लोगों की अभिब्यक्ति द्वारा उत्पन्न होते हैं। लोकगीतों के अंतर्गत ग्रामीण समाज में प्रचलित जादू टोना, तंत्र-मंत्र, देवी-देवता, रहन-सहन, खान-पान और रीति-रिवाज आदि का पता चलता है। इसमें वक्ता और श्रोता दोनों मिलते हैं इसकी शैली बिना सजावट की गतिशील होती है जो समाज के हित की बात करती है।

लोकगीतों में मनुष्य के कष्ट होते हैं साथ ही परेशानी तथा उल्लास आदि की अभिब्यक्ति मिलती है लोकगीतों में दर्शन से अधिक जीवन की बात देखने को मिलती है इसमें विद्रोह के स्वर भी मिलते हैं। इसमें लोक, जाति, धर्म, रीति, संप्रदाय, बंधन तथा वर्जनाओं का घोर विरोध होता है।

लोकगीतों में कजरी का महत्वपूर्ण स्थान है। इसे लोकगीतों की रानी कहा जाता है। कजरी गीत उस निर्मल दर्पण के समान है जिसमें ग्रामीण जनता का स्वरूप प्रतिबिम्बित होता है। लोक संस्कृति का जैसा दिव्य तथा अकृत्रिम प्रतिबिम्ब इस गीत में उपलब्ध होता है। कजरी के निर्मल निर्झरिणी में नहाकर केवल शरीर ही पवित्र नहीं होता आत्मा भी पावन बन जाती है। इसमें जिस समाज का चित्रण किया गया है वह स्वस्थ और सदाचारी है। कजरी गीतों में जिस धार्मिकता का वर्णन किया गया है यह संसार में शान्ति तथा प्रेम का सन्देश देता है। कजरी गीतों में संयोग और वियोग का बड़ा ही मार्मिक एवं सुन्दर सामंजस्य मिलता है। सावन में वर्षा का जल विरहणी के शरीर पर जब पड़ता है तो वह वियोग के ताप से जल उठती है। वही संयोगिनी के शरीर पर पड़े तो वह खुशी से झूमने लगती है। कजरी के बोल, कोयल की आवाज, बादल की गर्जना और रिमझिम वर्षा विरहिणी के दुखों को और बढ़ाते हैं लेकिन वही जिसका पति साथ है वह उस समय का लाभ उठाती है तथा अपने पति के साथ झूला झूलते हुए कजरी

का गीत गाती है। कजरी गीतों में समग्र रसों की अभिव्यक्ति मिलती है। इससे हृदय भावविभोर होकर रसों से भर जाता है। वीर रस तो रुके हुए रक्त का संचार कर देता है जिससे शरीर में उत्तेजना आ जाती है। करुण रस हृदय को पिघलाकर आँखों में आँसू भर देता है और हास्य रस वातावरण में अपना रस बिखराकर खुशनुमा बना देता है। शांत रस व्यक्ति को सदाचार और नैतिकता की ओर ले जाता है जिससे व्यक्ति को अपने जीवन का मुख्य कर्तव्यों का पता चलता है। कजरी गीतों में प्रकृति का स्थान महत्वपूर्ण है क्योंकि कजरी का मुख्य आधार प्रकृति ही है। सावन में गाये जाने के कारण कजरी का प्रकृति से जुड़ना स्वाभाविक है। 'कजरी' का नामकरण भी काले कजरारे बादलों के कारण हुआ है।

कजरी गीतों में यथार्थवाद तथा आदर्शवाद का बड़ा ही सुन्दर सामंजस्य मिलता है। जहाँ भाई-बहन, माता-पुत्री और पति-पत्नी के आदर्श चरित्र का चित्रण किया गया है वहाँ कजरी गीतों में ननद-भाभी, सास-बहू और सपत्नियों शाश्वतिक विरोध भी देखने को मिलता है। कजरी गीत में सामाजिक कुरीतियों में अनमेल विवाह, विधवा विवाह, वृद्ध विवाह और जुआ खेलने की निंदा की गयी है। दरअसल अनमेल विवाह दहेज प्रथा आदि ऐसी सामाजिक बुराइयाँ हैं, जो अनंतकाल से चली आ रही हैं। इनसे छुटकारा पाना आज भी असम्भव जान पड़ता है, क्योंकि समाज का कोई भी व्यक्ति इसके विरुद्ध आवाज नहीं उठाता। कजरी गीतों में सुखी समाज के धन-धान्य और विभूति के वर्णन के साथ ही गरीबी और घोर दरिद्रता का दृश्य भी दिखाई पड़ता है।

कजरी गीतों की उत्पत्ति के सन्दर्भ में विद्वानों ने कई मत माने हैं। किसी ने काले कजरारे बादल के कारण कजरी गीत की उत्पत्ति मानी है। भारतेन्दु और ग्रियर्सन के अनुसार कजली तीज के दिन गाये जाने के कारण इस गीत का नाम कजली पड़ा है। कजरी का जन्म स्थान मिर्ज़ापुर को माना जाता है। कजरी मुख्य रूप से तीन प्रकार की हैं भोजपुरी कजरी, बनारसी कजरी और मिर्जापुरी कजरी । कजरी गीतों का स्वरूप अब बदलने लगा है उसका विषय विस्तृत हो गाया है।

कजरी गीत में भोजपुरी भाषा के अतिरिक्त अन्य बोली और भाषाओं के शब्द भी दिखाई पड़ते हैं। जैसे-उर्दू, फारसी, अँग्रेजी और खड़ी बोली आदि। कजरी गीतों में तुक और लय का प्रयोग भी मिलता है। गाँव की महिलाएँ जब किसी गीत को गाती हैं तो दीर्घ के जगह लघु और लघु के जगह दीर्घ कर देती हैं जिससे गीतों में लयात्मकता आ जाती है। कुछ गीतों में नये शब्द जोड़कर अपने अनुरूप बना देती है। कजरी गीतों में उपमा अलंकार अधिक मिलता है और साथ ही अन्य अलंकारों का भी प्रयोग मिलता है।

कुलमिलाकर कह सकते हैं कि कजरी गीत मूलरूप से लोक नारी का पावस कालीन आभूषण है। जिस तरह बसंत के आते ही लोकहृदय फाग के रंगों में सराबोर हो उठता है, चैत के लगते ही ग्रामीण अंचलों में चैती के स्वर गूँज उठते हैं, उसी प्रकार सावन आते ही आकाश में काले कजरारे सघन मेंघों, चमकती बिजली और रिमझिम बरसते पानी के बीच कजरी के बोल लोकहृदय को प्रेम से भर देते हैं। झूलों पर झूलती ग्रामीण स्त्रियों की मधुर स्वर लहरी वातावरण को मादक बना देती है।